ड्रयू गिल्पिन फॉस्ट

इतिहासविद रचेंगी हारवर्ड का भविष्य

दीपांजली काकाती

क्रिस स्लिवी / हारवर्ड यूनिवर्सिटी न्यूज़ ऑफ़िस

इतिहास ड्रयू गिल्पिन फ़ॉस्ट के जीवन का अभिन्न अंग है। प्रमुख इतिहासविद और शिक्षाविद ड्रयू गिल्पिन फ़ॉस्ट का काफ़ी समय उन लोगों के अध्ययन में गुजरता है जो समय की लीक पर अपने पदचिह्न छोड़ गए। फ़रवरी में हारवर्ड विश्वविद्यालय की पहली महिला प्रेसिडेंट चुनी जाकर वह खुद इतिहास रच रही हैं।

ड्रयू गिल्पिन 1 जुलाई को जब अमेरिका के सबसे पुराने विश्वविद्यालय की अट्ठाइसवीं प्रेसिडेंट का कार्यभार लेंगी तो पहली बार अमेरिका के आठ अभिजात संस्थानों में से चार- हारवर्ड, ब्राउन, प्रिंस्टन और यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेन्सिलवैनिया की प्रमुख महिलाएं होंगी।

अपनी नियुक्ति की घोषणा के बाद एक संबोधन में सुश्री फ़ॉस्ट ने कहा, ''मैंने काफ़ी समय अतीत, और भविष्य पर उसके प्रभाव के बारे में सोचते बिताया है... हमारा साझा उद्यम है हारवर्ड के भविष्य को उसके अतीत से भी उज्जवल बनाना।''

गृहयुद्ध और अमेरिकी साउथ की यह विशेषज्ञ बताती हैं कि हारवर्ड एक नए कॉलेज पाठ्यक्रम को अपनाने के कगार पर है जो ''स्नातक स्तर पर अधिक स्पष्टता, अधिक चुनाव, और अधिक उत्साह तैयार करेगा। हाल ही में हमारे अध्यापक वर्ग ने अध्यापन के प्रति अधिक समर्पण की बात कहते हुए एक रपट भी प्रस्तुत की है।''

वह यह भी याद दिलाती हैं कि अगर हारवर्ड को आगे बढ़ना है तो उसे कला और विज्ञान के बीच के अवरोधों और उन अवरोधों से पार पाना होगा जो विभागों या विषयों के बीच सहयोग को हतोत्साहित करते हैं।

2006 में अमेरिकन काउंसिल ऑन एजुकेशन के एक अध्ययन के अनुसार कॉलेजों के प्रेसिडेंट में से 23 प्रतिशत महिलाएं हैं। इस अध्ययन पर टिप्पणी करते हुए अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ यूनिवर्सिटी विमैन ने कहा, ''यह आंकड़ा 1986 में 9.5 प्रतिशत से तो अधिक है लेकिन जाहिर है कि शिक्षण के इस क्षेत्र में अब भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व अपर्याप्त है।''

लेकिन दूसरी ओर वर्ष 2006 में आधे से अधिक अमेरिकी विश्वविद्यालय प्रेसिडेंट की आयु 60 वर्ष से ऊपर थी (1986 में यह आंकड़ा 14 प्रतिशत ही था) जो शिक्षण के क्षेत्र में महिलाओं के नेतृत्व के लिए शुभ संकेत माना जा रहा है। अमेरिकन काउंसिल ऑन एजुकेशन्स सेंटर फॉर पॉलिसी एनालिसिस की निदेशक जैक्लीन ई. किंग कहती हैं, ''सेवानिवृत्ति के सिलसिले को देखते हुए विश्वविद्यालयों के प्रेसिडेंट पदों पर विविधता लाने की अच्छी गुंजाइश है।''

पब्लिक ब्रॉडकास्टिंग सर्विस (पीबीएस) पर एक साक्षात्कार में सुश्री फ़ॉस्ट ने कहा, ''महत्वपूर्ण यह है कि मैं हारवर्ड की प्रेसिडेंट हूं, हारवर्ड की महिला प्रेसिडेंट नहीं।''

उन्होंने कहा कि फिर भी उनकी नियुक्ति उच्च शिक्षा, सार्वजनिक जीवन एवं अमेरिका में और आम तौर पर संसार में महिलाओं की स्थिति में बदलाव की प्रतीक है। उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा,''मैं एक प्रतीक हूं लेकिन इसके पीछे का यर्थाथ हारवर्ड या उच्च शिक्षा से कहीं अधिक विस्तृत है।''

ड्रयू गिल्पिन फ़ॉस्ट वर्ष 2001 से रैडक्लिफ़ इंस्टिट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडी एट हारवर्ड की संस्थापक डीन रही हैं। उससे पहले वह 25 साल यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेंसिल्वैनिया में पढ़ाती रही थीं और वहां के स्त्री अध्ययन कार्यक्रम की प्रमुख थीं। नए पद पर अपनी नियुक्ति की घोषणा के बाद उन्होंने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा,''युवा स्त्रियां मुझसे कहती हैं कि यह बहुत प्रेरणास्पद है। मैं सोचती हूं कि इसके जबर्दस्त प्रतीकात्मक महत्व को स्वीकार न करना गलत होगा। मैं आशा करती हूं कि मेरी नियुक्ति उस अवसर का एक प्रतीक होगी जो एक पीढ़ी पहले तक भी अकल्पनीय थी।''

पब्लिक ब्रॉडकास्टिंग सर्विस पर साक्षात्कार के दौरान उन्होंने आने वाली चुनौतियों के बारे में भी खुलासा किया। बात करते हुए सुश्री फॉस्ट ने कहा कि विश्वविद्यालयों को लेकर अमेरिकियों के विचारों में कई अंतर्विरोध हैं। ''हम उनसे प्रेम और घृणा एकसाथ करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे उनमें जाएं और इसके लिए कड़ी मेहनत करते हैं। लेकिन साथ ही हम यह भी कहते हैं कि उनमें संकीर्णता है और उनका प्रबंधन ठीक से नहीं होता।

वह मानती हैं कि अगले दशक में हारवर्ड का प्रदर्शन इन अंतर्विरोधों और चुनौतियों का उत्तर तो होगा ही, ''21 वीं सदी में विश्वविद्यालयों के चरित्र और अर्थ को परिभाषित भी करेगा- क्या वे उनसे की जा रही अपेक्षाओं पर खरे उतरने के लिए पर्याप्त लचीले, उद्यमशील, महत्वाकांक्षी साबित हो पाएंगे। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि क्या वे यह सब पड़ताल करने की अपनी अनूठी संस्कृति और विचार-विमर्श की परंपरा को बनाए रखते हुए ऐसा उस संसार में कर पाएंगे जिसका ध्रुवीकरण अकाट्य अनिश्चितताओं के आधार पर होता दिख रहा है।''

वर्जीनिया की शेननडोआ वैली में पली-बढ़ी सुश्री फ़ॉस्ट का जन्म का नाम कैथेराइन गिल्पिन था। मैसाच्युसेट्स की कांकार्ड एकेडेमी में पढ़ने के बाद उन्होंने ब्रिन मॉर से 1968 में स्नातक की उपाधि पाई। 1971 में उन्हें इतिहास में विशेष सम्मान के साथ स्नातकोत्तर उपाधि और 1975 में यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेंसिल्वानिया से अमेरिकी सभ्यता पर डॉक्टरल उपाधि प्राप्त हुईं।

2008 में प्रकाशित होने वाली उनकी छठी पुस्तक 'द रिपब्लिक ऑफ़ सफ़रिंग' 19 वीं सदी के अमेरिकियों के जीवन पर गृहयुद्ध में हुई भारी जनहानि के प्रभाव की पड़ताल करती है। इससे पहले छपी उनकी पुस्तक 'मदर्स ऑफ़ इन्वेंशन: विमेन ऑफ़ द स्लेवहोल्डिंग साउथ इन द अमेरिकन सिविल वार' (1996) को सोसायटी आफ़ अमेरिकन हिस्टॉरियन्स ने किसी अमेरिकी विषय पर सर्वश्रेष्ठ गैरकथा पुस्तक की श्रेणी में सम्मानित किया था।

ड्रयू गिल्पिन फ़ॉस्ट ने बचपन में ही उस समय मौजूद नस्लीय भेदभाव का विरोध किया। उन्होंने नौ साल की आयु में राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइज़नहावर को पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया था कि वह अश्वेतों के प्रति भेदभाव को खत्म करवाएं। परिवार के चार बच्चों के बीच इस इकलौती लड़की को लड़की का दूसरे दर्जे का जीवन बिल्कुल नहीं भाया। एक आत्मकथात्मक निबंध में उन्होंने लिखा,'' मैं वह विद्रोही थी जो न केवल नागरिक अधिकारों के समर्थन और वियतनाम युद्ध के विरूद्ध जुलूसों में शामिल हुई बल्कि जो हमेशा मां से लड़ती और उनकी इस सीख का विरोध करती रही थी कि यह दुनिया मर्दों की है और जितनी जल्दी तुम यह बात समझ लोगी उतने ही फ़ायदे में रहोगी।''

ड्रयू गिल्पिन फ़ॉस्ट (बीच में काली पोशाक में), ब्रिन मॉर कॉलेज की प्रेसिडेंट की कार्यकारी सहायिका नेल बूथ (बाएं लाल पोशाक में) के साथ। उनके पीछे हैं संवाददाता। यह दृश्य है हारवर्ड द्वारा उन्हें अध्यक्ष चुने जाने से ठीक पहले ब्रिन मॉर कॉलेज, पेन्सिलवैनिया का।

मैट रॉकेफ़ © ए. पी. - डब्ल्यू. पी.

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजें।